वाई शक्ति ध्वस्त
में 73 की मौत देश-विदेश 12
दो भारतीय कंपनियों पर पाबंदी
Sports
अंक-487
, मूल्य रु. 2.00
राष्ट्रीय सहारा
यानी पूर्ण सत्य
पटना ● कानपुर से प्रकाशित राष्ट्रीयता ● कर्त्तव्य ● समर्पण देहरादून, सोमवार, 23 फरवरी 2009

अपनों के लिए कुछ करें भी तो कैसे

अर्जुन बिष्ट/एसएनबी

देहरादून। पेट की खातिर सात समंदर पार अमरीका में बसने के बावजूद उत्तराखंड मूल के लोगों की अपनी मातृभूमि के प्रति ममता में कमी नहीं आयी। उन्होंने अपना मुकाम तो वहां हासिल कर लिया लेकिन अपनी धरती के लिए कुछ न कर पाने का मलाल आज भी उन्हें टीस रहा है। लिहाजा वे लोग वादियों में बसे इस राज्य के आधुनिक विकास के लिए अब कुछ कर गुजरने को आतुर हैं। उनका यही सपना है कि इस नवोदित राज्य को धन, तकनीक, विज्ञान व इलेक्ट्रानिक जैसे क्षेत्र में ऊंचाई तक ले

जाएं, पर उनका यह सपना पूरा हो पाएगा ऐसा नहीं लगता। क्योंकि राज्य सरकार से उन्हें कोई रिस्पांस नहीं मिल रहा है। वे यहां कर्नाटक, तमिलनाडु, आंध्रप्रदेश व दिल्ली की तर्ज पर एक एनआरआई सेल बनाये जाने की जरूरत महसूस करते हैं लेकिन राज्य के नीति निर्धारकों के पास उनकी बात सुनने के लिए समय ही नहीं है।

अजब

प्रवासियों को नहीं मिल रहा सरकार की ओर से रिस्पांस

इन प्रवासियों के मन में पहाड़ में एक नया शहर बसाने के लिए काम करने की दृढ इच्छा शक्ति भी है। उनका कहना है कि अमरीका में ऐसे कई शहर आज लोगों के पसंदीदा हैं जहां 10-15 साल पहले तक घने जंगल थे। उनका मानना है कि राज्य सरकार जरा भी साहस दिखाये तो गैरसैंण को इस राज्य का बेहतरीन सुविधाओं वाला पर्वतीय शहर बनाया जा सकता है। एसोसियेशन पिछले साल राज्य के 26 मेधावी छात्रों को छात्रवृत्ति शुरू कर चुका है। अमरीका व कनाडा में रह रहे इन प्रवासियों को इस नवोदित राज्य में पर्यटन, जल संसाधन व जड़ी-बूटी में असीम संभावनाएं दिखती हैं वे यहां की बुनियादी शिक्षा में व्यापक सुधार किये जाने की जरूरत महसूस करते हैं। उत्तराखंड एसोसियेशन आफ नार्थ अमरीका (उना) से जुड़े सैकड़ों प्रवासियों की यह पीड़ा रविवार को एसोसियेशन के अध्यक्ष विजय शर्मा ने पत्रकारों के समक्ष बयां की। वर्ष 1992 में गठित यह एसोसियेशन अमरीका व कनाडा में

(शेष पेज 15 पर)